Uma Pathak
Skt. Deptt.
B.A. III Part (content)

शकुन्तला का चरित्र-चित्रण -

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' की नायिका शकुन्तला है। वह विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की औरस पुत्री है। कण्व उसके पालन करनेवाले पिता हैं, जिनका शकुन्तला के प्रति विशिष्ट प्रेम है। इसका उल्लेख प्रस्तुत नाटक के तृतीय अंक में उल्लिखित है - 'सा खलु भगवतः कण्वस्य कुलपतेरुच्छ्वसितम्' अर्थात वह शकुन्तला महर्षि कण्व की साँसों के समान है। शकुन्तला की व्यक्तिगत विशेषताओं को यों देखा जा सकता है -

(1) अलौकिक सौन्दर्य - अप्सरा पुत्री होने के कारण अप्रतिम सौन्दर्य की स्वामिनी है-शकुन्तला। सम्प्रति वह युवती है, उसमें ललितभावों का समागम हो चुका था। इस अवसर पर राजा पेड़ों को सींचती हुई सखियों के बीच इसको देखता है, सहसा उसके मुख से निकलती है - 'अहो मधुरमासां दर्शनम्' तथा 'शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुः' अप्सरा-पुत्री जानकर अनायास कह उठता है - 'मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः। न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'। (अभि० शाकु० - 1/24)
सुन्दरी रानियों का स्वामी होने के बावजूद शकुन्तला की प्राप्ति को अखण्ड पुण्यों का फल ~~मिलता है~~ मानता है - अखण्डं पुण्यानां फलमिव, न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति ?' वल्कल धारण करने से इसके सौन्दर्य में

वृद्धि ही हो गयी है —
"सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म-
लक्ष्मी तनोति। इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिव
हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।" (अभि० शाकु० 1/20)

② लज्जाशीलता — लज्जा, शील, विनय ये नारियों को अलंकृत करनेवाले गुण हैं। इन सभी का सद्भाव शकुन्तला में है। राजा को देखकर उसके मन में काम-विकार उत्पन्न होने पर वह सोचती है कि मेरे मन में यह तपोवन-विरोधी भाव कैसे उत्पन्न हो गया? आरंभ में वह इसे अपनी सखियों से भी छिपाती है। तीर्थयात्रा से लौटे हुए कण्व को यह समाचार आकाशवाणी द्वारा ज्ञात हुआ। सातवें अंक में दुष्यन्त से भेंट होने पर उसको अत्यन्त आनंद की अनुभूति होती है, फिर भी वह कहती है — 'मैं दुष्यन्त के साथ गुरुजनों के समीप जाने पर लज्जा का अनुभव कर रही हूँ।'

③ अनन्य पतिनिष्ठा — राजा दुष्यन्त को देखने से पहले शकुन्तला ब्रह्मचारिणी भुग्धनायिका थी, उसके दर्शन से शकुन्तला के मन में काम-विकार उत्पन्न हुआ। उसने आत्मसमर्पण कर राजा से गान्धर्व-विवाह कर लिया। शाप के कारण दुष्यन्त अपने सहवास काल को भूल गया था। शकुन्तला दुष्यन्त की याद में कृश होती जा रही थी। पाँचवें अंक में अपना प्रत्याख्यान सुनकर, मृत्यु के संबंध में तो वह सोचती है, किन्तु दूसरे पति के वरण को नहीं।

Scanned with CamScanner